प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधिः पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- २१९ भोपाल १० मार्च, डाक ११ मार्च २०२६ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैछिक)

उनके सपने हकीकत में बदलते रहे। अंधेरे में किरण बनकर चमकते रहे।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-३१

कैलाश आदमी

शिक्षाविद्, गांधीवादी विचारक और जय जगत के पुरोधा श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे जो निर्दलीय प्रकाशन के संरक्षक सह सलाहकार रहे का अपनी किशोरावस्था से लेकर मृत्यु पर्यंत शिक्षा और सर्वोदय विचार के लिये समर्पण किसी से छिपा नहीं रहा।

एक ओर श्री दुबे मध्यप्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसंधान परिषद् से जुड़े रहे, वहीं दूसरी ओर उन्हें तत्कालीन संचालक श्री शरदचंद बेहार ने शालेय शिक्षा मंत्री के परामर्शदाता के रूप में कार्य करने का अवसर दिया। वे मानव संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली में शिक्षक कल्याण के परामर्श हेतु प्रतिनियुक्ति पर रहे और इस बीच शैक्षिक संस्थाओं के राष्ट्रीय महासंघ (एआईएफईए) से भी जुड़े रहे।

श्री दुबे ने सर्वोदय और गांधी विचार के लिए युवाओं को प्रशिक्षण देने वाले श्री सेलम नंजुण्डय्या सुब्बराव को अपना गुरु माना। श्री सुब्बराव से उनकी प्रथम भेंट तत्कालीन भेलसा (विदिशा) प्रवास के दौरान वर्ष १९५५ के आरंभ में हुई और वे श्री सुब्बराव के कर्मठ व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने श्री सुब्बराव को अपना गुरु मानते हुए शिक्षा व शिक्षक कल्याण के साथ सर्वोदय विचार को ही संपूर्ण निष्ठा व तन्मयता से अपना लिया।

मैं श्री सुब्बराव से लगभग एक दशक बाद संपर्क में आया तो मुझे सैकड़ों बार श्री दुबे की जय जगत के प्रति निष्ठा से साक्षात होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं अपने सुदीर्घ अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि श्री दुबे ने अपने जीवन का स्वर्णिम काल शिक्षा व सर्वोदय आंदोलन में लगाने तथा २२वीं सदी के लिए 'नई विश्व सरकार' की कल्पना करने विषयक जो कीर्तिमान स्थापित किया वह अद्भुत व विलक्षण है।

श्री दुबे जिनका निधन ८ मार्च २०२६ की सुबह हुआ, का जन्म २६ जनवरी १९३९ को हुआ था। सभी जानते हैं कि २६ जनवरी का दिन भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है क्योंकि इस दिन स्वाधीन भारत को अपना संविधान मिला था जो १९५० में लागू हुआ। ८ मार्च की तिथि भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इस दिन पूरे विश्व में महिला दिवस मनाया जाता है वहीं भारत में यह दिन शिक्षा जगत के इतिहास में दर्ज है क्योंकि इस दिन वर्ष १९६८ में सर्वोदय के शिखर पुरुष आचार्य विनोबा भावे ने बिहार के भागलपुर जिला स्थित कहलगांव में आचार्यकुल नामक संस्था की स्थापना की थी। चूंकि मैं भी आचार्य कुल से पिछले पांच दशकों से जुड़ा हुआ हूं और वर्ष २०२५ से इसका कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हूं। श्री दुबे भी इस संस्था से जुड़े रहे और उनका यह प्रयास रहा कि आचार्य कुल वैश्विक स्वरूप ग्रहण करें।

श्री दुबे ने जब वर्ष २०१४ में ७५ वर्षायु पार की तब मैंने कुछ मित्रों जिनमें शिक्षा से जुड़े हुए विद्वान सम्मिलित थे को लेकर अभिनंदन समिति गठित की। समिति ने मेरी अध्यक्षता में हुए बैठक में निर्णय लिया कि श्री दुबे के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को लेकर अमृत महोत्सव आयोजित किया जाए तथा इस अवसर पर अभिनंदन ग्रंथ भी प्रकाशित किया जाए।

श्री दुबे के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को कुछेक पन्नों में बांधना अथवा समेटना कठिन कार्य था किंतु मैंने श्री रामगोपाल रैकवार एवं श्री दामोदर जैन से मिलकर अभिनंदन ग्रंथ के लिए सामग्री एकत्र की तथा उसका लोकार्पण नोबल पुरस्कार से अलंकृत श्री कैलाश सत्यार्थी से मप्र राज्य सहकारी बैंक (अपेक्स) के समन्वय भवन में कराया।

श्री दुबे स्वयं एक आदर्श शिक्षक तो रहे ही, सर्वोदय विचार के भी वे महारथी हैं। जहाँ तक उनके व्यक्तिगत जीवन का प्रश्न है, उनका चरित्र ऐसा आदर्श है जिससे वर्तमान पीढ़ी ही नहीं, भावी पीढ़ियों भी युगों-युगों तक प्रेरणा लेती रहेंगी। अपने विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु उन्होंने कई पुस्तकों का लेखन व संपादन किया है। उन्होंने वर्ष २०१० में द्विभाषी (हिंदी व अंग्रेजी) मासिक पत्रिका 'स्कूल शिक्षा' की शुरुआत की। दो वर्ष पूर्व श्री दुबे ने इसके प्रकाशन का काम अपनी पुत्री श्रीमती अंजु वाजपेयी को सौंप दिया किंतु उन्होंने समयाभाववश यह कार्य मुझे सौंपे जाने का परामर्श दिया और जब श्री दुबे ने यह भार मेरे कंधों पर डाला तो मैंने भी उनका आग्रह टालने की कोशिश की क्योंकि मैं निर्दलीय प्रकाशन के बैनर तले पहले ही 'निर्दलीय' समाचार पत्र साप्ताहिक, मासिक और दैनिक स्वरूप में निकाल रहा हूं। श्री दुबे ने कहा कि 'स्कूल शिक्षा' आपको ही निकालना है भले ही मासिक के स्थान पर त्रैमासिक स्वरूप में प्रकाशित करें ताकि शिक्षा की ज्योति निरंतर प्रज्जवलित होती रहे। अस्तु, निर्दलीय प्रकाशन ने 'स्कूल शिक्षा' के प्रकाशन का कार्य जारी रखने का निर्णय लिया और जब इस निर्णय की जानकारी श्री दुबे को दी तो वे बहुत खुश हुए।

हर व्यक्ति स्वप्न या सपने देखता है, यह अलग बात है कि कोई रात में तो कोई दिन में और कोई केवल अपनी खुशी के लिए तो कोई दूसरों की खुशी के लिए। सपनों का जिक्र में अपने अग्रज श्री सुरेन्द्रनाथ दुबे के बारे में कर रहा है जो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए सपने संजोते रहे। अभिनंदन समिति ने तय किया था कि श्री दुबे के अमृत महोत्सव पर 'अभिनंदिनी' शीर्षक से एक अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित कर उन्हें भेंट किया जाए लेकिन थी दुबे की आंतरिक इच्छा रही कि इसका नाम 'जय जगत' रखा जाए जो सर्वोदय संत आचार्य विनाबो भावे के जीवन का मूल मंत्र रहा और यही मंत्र थी दुबे के जीवन की दृष्टि बन गई।

इसी सोच के तहत ही उन्होंने स्वयं एक शोधपरक आलेख तैयार किया, जिसका शीर्षक था- मेरे सपनों की बाईसवीं सदी... एक विश्व सरकार एवं जय जगत। 'स्कूल शिक्षा' के त्रैमासिक अंक में हमने २०० करोड़ बच्चों के नाम प्रकाशित किया जिसका शीर्षक रखा 'एक विश्व' जिसने श्री दुबे की खुशी कई गुना बढ़ा दी। गत दिवस देहावसान के बाद जब उन्हें मुखाग्नि दी गई तब उनके मुख पर खुशी की वही मुस्कान चमक रही थी।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तिया-

उनके सपने हकीकत में बदलते रहे।
अंधेरे में किरण बनकर चमकते रहे॥

गजल संग्रह 'हम सफर जैसे दिन' का लोकार्पण

निर्दलीय संवाद

नागपुर। *सुबह की तरह सुहानी है, मेरी ग़ज़ल परिन्दों का दानापानी है, मेरी ग़ज़ल।*
जीकर देखा जिन्दगी, तुझे आजमाया, तेरी आंखों का पानी है मेरी ग़ज़ल।

ग़ज़ल की यह पंक्तियाँ है माधुरी राऊलकर की। विदर्भ हिन्दी साहित्य सभागृह में सम्मेलन के गजलकारा माधुरी राऊलकर के प्रक्षेप प्रकाशन से प्रकाशित 'हम सफर जैसे दिन' ग़ज़ल संग्रह का लोकार्पण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सागर खादीवाला की मध्यक्षता में सम्पन्न हुये इस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि डॉ. वेदप्रकाश मिश्रा, कुलाधिपति, दत्ता मेघे इंस्टिटयूट ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च, नागपुर, और प्रसिध्द किडनी रोग विशेषज्ञ डॉ. शिवनारायण आचार्य थे।

कार्यक्रम की सुरूआत मीरा जोगलेकर की सरस्वती वंदना से हुई। माधुरी ने अपने मनोगत में कहा कि यहां की साहित्यिक पृष्ठभूमि साहित्यकारों के लिये अनुकूल है जहां वे अपनी साहित्यिक गतिविधियों को जारी रखते है। और उन्होंने अपनी दो ग़ज़ले प्रस्तुत की हमसफर जैसे दिन यह उनका २१ वां गजल संग्रह है। डॉ. वेदप्रकाश मिश्रा ने कहा कि ग़ज़ल लिखना आसान नहीं लेकिन यह काम माधुरी ने तन्यमता से किया है। गजल उन्मुक्त विचरण करती है और दिलों को छू लेती है। डॉ. शिवनारायण आचार्य ने उनकी माँ पर लिखी गजल पढी। माधुरी में घनी रात में दोपहर कर के माॅ जीती है दिल को पत्थर कर के माँ। बस एक माँ का रिश्ता कायम रखने, भीत माती मीलों मिल सफर कर के माँ।

उन्होंने मार्मिकता से इस गजल का विवेचन किया और कहा कि इन्होने इतने सारे विषयपर ग़ज़लें लिखी जो सादगीपूर्ण है। डॉ. सागर खादीवाला ने कहा कि इनकी ग़ज़लों का लहजा सालो पूर्व जैसा था आज भी वैसा है सहज सरलता से परिपूर्ण जिसे समझ में कोई कठिनाई नहीं होती इसलिये ये सीधे श्रोताओं के दिल तक पहुंचती है। अतिथियों द्वारा माधुरी राऊलकर का शॉल, श्रीफल और पुष्पगुच्छ से सत्कार किया गया।

संचालन प्रा. आदेश जैन और आभार अनिल मालोकर ने किया। कार्यक्रम में डॉ. सुवास राऊलकर, नरेन्हें परिहार, डॉ. राम मुले, डॉ. बालकृष्ण महाजन, प्रा. आनंद देशकर, मनीष सोनी, अनिल मालोकर, अविनाश बागडे, टीकाराम साहू अजय पांडे अशोक डोळस, अरूण खरे, इन्दिरा किसलय, रंजना श्रीवास्तव, सुजाता दुबे, रूबी दास, प्रभा मेहता, पूनम मिश्रा, नंदिता सोनी, नीलम शुक्ला, देवयानी बॅनर्जी, सुरेखा खरे, पुनम तिवारी, अमिता शाह, हेमलता मिश्र, पुष्पा पांडे, सुविधी जयस्वाल, नीता वर्मा, सुषमा शर्मा, कल्पना शुक्ला इत्यादि साहित्यिक उपस्थित थे।

रक्तदान महादान: डॉ. इंदिरा बर्मन हुईं गांधी मेडिकल कॉलेज-हमीदिया द्वारा सम्मानित

निर्दलीय संवाद

भोपाल। राष्ट्रीय सेवा योजना की भावना को साकार करते हुए उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल की सक्रिय कार्यक्रम अधिकारी डॉ. इंदिरा बर्मन को रक्तदान के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए गांधी चिकित्सा महाविद्यालय, भोपाल एवं हमीदिया चिकित्सालय, भोपाल द्वारा सम्मानित किया गया।

डॉ. इंदिरा बर्मन पिछले 20 वर्षों से लगातार रक्तदान शिविरों का आयोजन कर

समाज में सेवा और मानवता का प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं। उनके नेतृत्व में आयोजित इन शिविरों के माध्यम से न केवल युवाओं में रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ी है, बल्कि असंख्य जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त उपलब्ध कराकर कई अनमोल जिंदगियां बचाने में महत्वपूर्ण सहयोग मिला है।

उनकी यह सतत पहल समाज के लिए एक प्रेरणा बन गई है, जो यह संदेश देती है कि रक्तदान महादान है और एक छोटी-सी पहल भी किसी की जिंदगी बचाने का माध्यम बन सकती है। डॉ. बर्मन का यह समर्पण सेवा, संवेदनशीलता और मानवता की सच्ची मिसाल है।

मौज-मजे के पर्यटन-स्थल बनते तीर्थ

डॉ. ओ.पी.जोशी

हाल ही में मध्यप्रदेश सरकार ने धार्मिक स्थानों को प्रभावित करने वाली दो बड़ी परियोजनाएं वापस ली हैं। उज्जैन में 'लैण्ड पुलिंग एक्ट' को लेकर संतों एवं किसानों के विरोध के बाद इसे वापस लेने की घोषणा की गई। यह पारंपरिक भूमि अधिग्रहण के विकल्प की तरह एक ऐसी नीति है जिसमें सरकार विकास कार्यों के लिए किसानों की जमीन लेती है और विकसित करने के बाद लगभग 50त्न हिस्सा वापस कर देती है। इसके अलावा ओंकारेश्?वर में प्रस्तावित 'ममलेश्?वर-लोक योजना' भी निरस्त की गई जिसका विरोध स्थानीय लोग कर रहे थे। इसके पूर्व जैन समाज ने भी अपने धर्मस्थल 'सम्मेद शिखरजी' को केन्द्र तथा झारखंड राज्य की पर्यटन सूची से बाहर करवाया था।

ये सभी निर्णय धार्मिक स्थलों की पवित्रता बनाये रखने के साथ-साथ पर्यावरण हितैषी भी हैं। धार्मिक-स्थलों को पर्यटन-स्थलों में तब्दील करने से उस क्षेत्र की 'धारण क्षमता' से ज्यादा यात्री आते हैं जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता है, प्रदूषण फैलता है और निष्पादन के अभाव में कूड़े-कचरे की समस्या भी पैदा होती है। पिछले वर्षों में केदारनाथ, जोशीमठ, उत्तरकाशी, चमोली, सिक्किम एवं कुल्लू आदि स्थानों पर आयी आपदाओं में एक बड़ा कारण बड़ी संख्या में यहां पहुंचे यात्रियों से बिगड़ा पर्यावरण रहा है।

जलवायु परिवर्तन से पैदा 'चरम मौसम' की दुर्घटनाओं ने इन आपदाओं में आग में घी का कार्य किया है। उत्तराखण्ड के चारों तीर्थ स्थान (बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री एवं यमुनोत्री) बहुत कुछ पर्यटन केन्द्र में बदल गये हैं। वर्ष 2000 के दशक में इन स्थलों पर 10 लाख यात्री प्रतिवर्ष आते थे, परन्तु अब संख्या 50 लाख तक पहुँच गयी है। केदारनाथ में वर्ष 2025 में 17 लाख 68 हजार लोगों ने बाबा केदारनाथ के दर्शन किए एवं 2300 टन कचरा गौरीकुण्ड से धाम के मध्य फेंका गया। इस कचरे को उपचारित करने के पूर्व सोनप्रयाग तक लाने में लगभग 25 करोड़ रुपये खर्च होने की गणना की गयी थी। उपचार के अभाव में यह कचरा पर्यावरण के सभी भागों को प्रदूषित कर सकता है।

इस प्रकार बढ़ती पर्यटकों की संख्या से हिमालय की पारिस्थितिकी को गंभीर खतरा पैदा हो गया है। इससे बचने का एकमात्र उपाय यात्रियों की संख्या घटाना ही है। इस संदर्भ में 'जी.बी. पंत हिमालयी पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान, अल्मोड़ा' एवं 'उत्तराखंड उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय' ने संयुक्त अध्ययन कर इन तीर्थ स्थलों पर यात्रियों की प्रतिदिन की संख्या का निर्धारण किया है जो इन स्थलों की 'धारण-क्षमता' पर आधारित है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री तथा यमुनोत्री के लिए निर्धारित संख्या क्रमश -15,778, 13,111, 8,178 तथा 6,160 बतायी गयी है। इस अध्ययन में पिछले 23 वर्षों (2000 से 2023 तक) के डाटा, चारों धाम का क्षेत्रफल, भौगोलिक स्थिति, मौसम तथा आधारभूत व्यवस्था आदि शामिल किये गए हैं। बढ़ते पर्यटन की पूंजी का मोह छोड़कर इस अध्ययन के दिशा-निर्देशों के अनुसार यदि व्यवस्था की जाए तो पारिस्थितिकी संतुलन बनेगा एवं नष्ट हुई प्रकृति को दोबारा फलने-फूलने का मौका मिलेगा। उज्जैन में 'महाकाल-लोक' बनने (अक्टूबर 2022) के बाद वहां का पर्यावरण भी बिगड़ने लगा है। 'मंदिर प्रबंधन समिति' द्वारा वर्ष 2024 में दी गयी एक जानकारी के अनुसार मंदिर में चार वर्ष पूर्व तक 24-25 हजार दर्शनार्थी प्रतिदिन आते थे, परन्तु अब यह संख्या बढ़कर एक लाख तक हो गयी है। त्यौहारों के दिनों में यह संख्या तीन लाख तक पहुंच जाती है। शहर में पिछले 3-4 वर्षों में सड़क निर्माण, सडक-चौड़ीकरण, हेलीपेड, मेडिसिटी, आवास भवन, पूल, फ्लाय-ओवर एवं अन्य विकास योजनाओं के लिए कई क्षेत्रों में पुराने हजारों छायादार पेड़ काटे गए हैं, हालांकि कुछ संस्थाओं तथा स्थानीय लोगों ने पेड़ कटाई का विरोध भी किया था। उज्जैन जिले में 6091 वर्ग किलोमीटर भूमि का केवल 0.69 प्रतिशत (42 वर्ग किलोमीटर) में ही वन-क्षेत्र है। पेड़ों की कटाई तथा निर्माण कार्यों से उड़ती धूल आदि से वायु गुणवत्ता, भूजल स्तर तथा मौसम पर विपरित प्रभाव होने लगा है। संस्था 'रेस्पायर लिविंग साइंस' की एक रिपोर्ट (जनवरी 2024) अनुसार नवी-मुम्बई तथा उज्जैन में वायु-प्रदूषण (2.5 पीएम के संदर्भ में) 46 बढ़ा है। -सप्रेस

प्रति वर्ष विश्व महिला दिवस क्यों?

निर्दलीय संवाद

प्रयागराज। प्रतिवर्ष विश्व महिला-दिवस का आयोजन होता है और उसके लिए अलग-अलग विषय भी निर्धारण किये जाते हैं; परन्तु खेद का विषय है! किसी विषय का कोई क्रियान्वयन् नहीं किया जाता। इस वर्ष का विषय रखा गया है- गीव टु गेन। यह विषय सारगर्भित है, जिसका आशय है कि जब हम दूसरों को सहारा देते हैं तब पूरी मानवता का लाभ होता है। इसका भावार्थ है- महिलाओं और लड़कियों को विकासपथ पर ले जाने के लिए संसाधन, ज्ञान और अवसर का आदान-प्रदान करना।

उपर्युक्त संदर्भ से जोड़ते हुए, सर्जनपीठ, प्रयागराज की ओर से विश्वमहिला-दिवस की पूर्व-संध्या मे कब तक छली जाती रहेंगी, महिलाएँ विषय पर एक विचारोत्तेजक राष्टीय आन्तर्जालिक बौद्धिक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

सोलन (हिमाचलप्रदेश) से प्रो. फ़हमिदा ख़ातून ने बताया- विश्व महिला-दिवस का आयोजन ऐसे समय मे किया जायेगा, जब न्याय-व्यवस्था दबाव मे है; संघर्ष, दमन और राजनीतिक तनाव क़ानून के शासन को कमज़ोर करते आ रहे है। सूरत (गुजरात) से साहित्यकार डॉ. दिविशा मजूमदार ने कहा- इस दिवस को महिला-पुरुष मना तो लेते हैं; परन्तु इस दिवस के निर्धारण के पीछे के मूल कारण से अनभिज्ञ रहते हैं। आज भी देश मे एक चार साल की बच्ची से लेकर वयोवृद्धा तक सुरक्षित नहीं है। जिसके हाथ मे लाठी है, उसी का दबदबा दिख रहा है।

आयोजक, व्याकरणवेत्ता एवं भाषाविज्ञानी आचार्य पं. पृथ्वीनाथ पाण्डेय ने इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अवगत कराया- वास्तव मे, इसके पीछे वर्ष १९०८ की वह संघर्ष-व्यथा-कथा है, जब १५ हज़ार महिलाओँ ने काम के घण्टे कम करने और अत्युत्तम वेतन और मतदान का अधिकार पाने के लिए न्यूयॉर्क मे वर्ष १९०८ में आन्दोलन किया था, जिसका परिणाम रहा कि वर्ष १९१० में कोपेनहेगन (डेनमार्क) के एक विश्व-सम्मेलन मे जर्मन की प्रतिनिधि क्लारा जेटकिन के प्रतिवर्ष विश्वमहिला-दिवस-आयोजन कराने के एक प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया था, तब राइट्स जस्टिस, एक्शन फॉर ऑल वीमन एण्ड गर्ल्स विषय निर्धारित किया गया था, जिसका आशय है कि जब तक महिलाओं को न्याय नहीँ मिलेगा तब तक उनके अधिकार केवल शब्द बनकर रह जायेंगे। तब से अब तक महिलाओं की कमोवेश वही स्थिति बनी हुई है। प्रयागराज से कवि शान्तनु भदौरिया ने कहा-हमारा समाज अपने भाव-विचार, वक्तव्य, लेखनादिक मे जिन महिलाओँ की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक उपलब्धि को गिनाते हुए, अपनी पीठ ठोंकता आ रहा है, वह मात्र एक छलावा है। फ़रीदाबाद से सामाजिक कार्यकर्ता अंजुम वीर ने बताया-हम लैंगिक समानता की बातेँ तो बहुत करते आ रहे हैं; परन्तु जब उसे हक़ीक़त के आईने मे देखते हैँ तब सच्चाई सामने आती है। वह सच्चाई है- भारत में महिलाएँ पूरी तरह से असुरक्षित हैं।